श्रीः

श्रीमते रामानुजाय नमः

श्रीमते निगमान्तमहादेशिकाय नमः

गोस्वामी श्री तुलसीदास जी द्वारा रचित

॥ श्री हनुमान बजरङ्ग बाण ॥

This document has been prepared by

Sunder Kidāmbi

with the blessings of

श्री रङ्गरामानुज महादेशिकन्

His Holiness śrīmad āṇḍavan śrīraṅgam

श्रीः

श्रीमते रामानुजाय नमः

श्रीमते निगमान्तमहादेशिकाय नमः

॥ श्री हनुमान बजरङ्ग बाण ॥

दोहा

निश्चय प्रेम प्रतीति ते बिनय करैं सनमान।
तेहि के कारज सकल सुभ सिद्ध करैं हनुमान॥

चौपाई

जय हनुमन्त सन्तहितकारी।
सुनि लीजै प्रभु बिनय हमारी॥ 1 ॥

जन के काज बिलम्ब न कीजै।
आतुर दौरि महासुख दीजै॥ 2 ॥

जैसे कूदि सिन्धु के पारा।
सुरसा बदन पैठि बिस्तारा॥ 3 ॥

आगे जाय लङ्किनी रोका।
मारेहु लात गई सुरलोका॥ 4 ॥

जाय विभीषन को सुख दीन्हा।
सीता निरखि परमपद लीन्हा॥ 5 ॥

बाग उजारि सिन्धु महँ बोरा।
अति आतुर जमकातर तोरा॥ 6 ॥

अछय कुमार मारि संहारा।
लूम लपेटि लङ्क को जारा॥ 7॥

लाह समान लङ्क जरि गई।
जय जय धुनि सुरपुर नभ भई॥ 8॥

अब बिलम्ब केहि कारन स्वामी।
कृपा करहु उर अन्तरजामी॥ 9॥

जय जय लखन प्रान के दाता।
आतुर ह्वै दुख करहु निपाता॥ 10॥

जय हनुमान जयति बलसागर।
सुरसमूहसमरथ भटनागर॥ 11॥

ओं हनु हनु हनु हनुमन्त हठीलै।
बैरिहि मारु वज्र की कीलै॥ 12॥

ओं हीं हीं हीं हनुमन्त कपीसा।
ओं हुं हुं हुं हनु अरि उरसीसा॥ 13॥

जय अञ्जनिकुमार बलवन्ता।
सङ्करसुवन बीर हनुमन्ता॥ 14॥

बदन कराल कालकुलघालक।
रामसहाय सदा प्रतिपालक॥ 15॥

भूत प्रेत पिसाच निसाचर।
अगनि बेताल काल मारी मर॥ 16॥

इन्हें मारु तोहि सपथ राम की।
राखु नाथ मरजाद नाम की॥ 17॥

सत्य होहु हरि सपथ पाइ कै।
रामदूत धरु मारु धाइ कै॥ 18॥

जय जय जय हनुमन्त अगाधा।
दुख पावत जन केहि अपराधा॥ 19॥

पूजा जप तप नेम अचारा।
नहि जानत कछु दास तुम्हारा॥ 20॥

बन उपबन मग गिरि गृह माहीं।
तुम्हरे बल हौं डरपत नाहीं॥ 21॥

जनकसुताहरिदास कहावौ।
ता की सपथ बिलम्ब न लावौ॥ 22॥

जय जय जय धुनि होत अकासा।
सुमिरत होय दुसह दुख नासा॥ 23॥

चरन पकरि कर जोरि मनावौं।
यहि औसर अब केहि गोहरावौं॥ 24॥

उठ उठ चलु तोहि रामदोहाई।
पायँ परौं कर जोरि मनाई॥ 25॥

ओं चम चम चम चम चपल चलन्ता।
ओं हनु हनु हनु हनु हनुमंता॥ 26॥

ओं हं हं हाँक देत कपि चञ्चल।
ओं सं सं सहमि पराने खलदल॥ 27॥

अपने जन को तुरत उबारौ।
सुमिरत होय अनंद हमारौ॥ 28॥

यह बजरङ्गबाण जेहि मारै।
ताहि कहौ फिर कवन उबारै॥ 29॥

पाठ करै बजरङ्गबाण की।
हनुमत रच्छा करैं प्रान की॥ 30॥

यह बजरङ्गबाण जो जापैं।
तासों भूतप्रेत सब काँपैं॥ 31॥

धूप देय जो जपै हमेसा।
ता के तन नहिं रहै कलेसा॥ 32॥

दोहा

उर प्रतीति दृढ सरन ह्वै पाठ करै धरि ध्यान।
बाधा सब हर करै सब काम सफल हनुमान॥ 33॥

॥ इति श्री हनुमान बजरङ्ग बाण समाप्त॥